

## सूरह बनी इस्राईल - 17

سُورَةُ بَنِي إِسْرَآءِيلَ

### सूरह बनी इस्राईल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस की आयत (2-3 में बनी इस्राईल से संबंधित कुछ शिक्षाप्रद बातें सुना कर सावधान किया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह (बनी इस्राईल) रखा गया है। और इस की प्रथम आयत में इस्राअ (मेअराज) का वर्णन हुआ है इसलिये इस का दूसरा नाम सूरह (इस्राअ) भी है।
- आयत 9 से 22 तक कुर्आन का आमंत्रण प्रस्तुत किया गया है। और आयत 39 तक उन शिक्षाओं का वर्णन है जो मनुष्य के कर्मों को सजाती हैं और अल्लाह से उस का संबंध दृढ़ करती हैं। और आयत 40 से 60 तक विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है।
- आयत 61 से 65 तक में शैतान इब्लीस के आदम (अलैहिस्सलाम) के सज्दे से इन्कार, और मनुष्य से बैर और उस को कुपथ करने के प्रयास का वर्णन किया गया है, जो आज भी लोगों को कुर्आन से रोक रहा है। और उस से सावधान किया गया है।
- आयत 66 से 72 तक तौहीद तथा परलोक पर विश्वास की बातें प्रस्तुत करते हुये आयत 77 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध की आंधियों में सत्य पर स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 78 से 82 तक में नमाज़ की ताकीद, हिज्रत की ओर संकेत, तथा सत्य के प्रभुत्व की सूचना और अत्याचारियों के लिये चेतावनी है।
- आयत 83 से 100 तक में मनुष्य के कुकर्म पर पकड़ की गई है। तथा विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर दिये गये हैं। फिर आयत 104 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के चमत्कारों की चर्चा और उस पर ईमान न लाने के कारण फिरौन पर यातना के आ जाने का वर्णन है।
- आयत 105 से 111 तक यह निर्देश दिये गये हैं कि अल्लाह को कैसे पुकारा जाये, तथा उस की महिमा का वर्णन कैसे किया जाये।

### मेअराज की घटना:

- यह अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषता है कि

हिजूरत से एक वर्ष पहले अल्लाह ने एक रात आप को मस्जिदे हराम (काँबा) से मस्जिदे अक्सा तक, और फिर वहाँ से सातवें आकाश तक अपनी कुछ निशानियाँ दिखाने के लिये यात्रा कराई। फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «बुराक़» (एक जानवर का नाम, जिस पर बैठ कर आप ने यह यात्रा की थी) पर सवार किया और पहले मस्जिदे अक्सा (फ़िलस्तीन) ले गये वहाँ आप ने सब नबियों को नमाज़ पढ़ाई। फिर आकाश पर ले गये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक आकाश पर नबियों से मिलते हुये सातवें आकाश पर पहुँचे। स्वर्ग और नरक को देखा। इस के पश्चात् आप को ((सिद्रतुल मुन्तहा)) ले जाया गया। फिर ((बैतुल मामूर)) आप के सामने किया गया। उस के पश्चात् अल्लाह के समीप पहुँचाया गया। और अल्लाह ने आप को कुछ उपदेश दिये, और दिन-रात में पाँच समय की नमाज़ अनिवार्य की। (सहीह बुख़ारी-3207, मुस्लिम- 164) (और देखिये: सूरह नज्म)

- जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सवेरे अपनी जाति को इस यात्रा की सूचना दी तो उन्होंने ने आप का उपहास किया और आप से कहा कि बैतुल मक्दिस की स्थिति बताओ। इस पर अल्लाह ने उसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने कर दिया, और आप ने आँखों से देख कर उन को उस की सब निशानियाँ बता दी। (देखिये: सहीह बुख़ारी-3437, मुस्लिम- 172)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जाते और आते हुये राह में उन के एक काफ़िले से मिलने की भी चर्चा की और उस के मक्का आने का समय और उस ऊँट का चिन्ह भी बता दिया जो सब से आगे था और यह सब वैसे ही हुआ जैसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बताया था। (सीरत इब्ने हिशाम-1/402-403)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. पवित्र है वह जिस ने रात्रि के कुछ क्षण में अपने भक्त<sup>[1]</sup> को मस्जिदे

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنْ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।



हराम (मक्का) से मस्जिदे अक्सा तक यात्रा कराई। जिस के चतुर्दिग हम ने सम्पन्नता रखी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का दर्शन कराये। वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي  
بُرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ  
الْبَصِيرُ

2. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की और उसे बनी इस्राईल के लिये मार्गदर्शन का साधन बनाया कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक<sup>[1]</sup> न बनाओ।

وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي  
إِسْرَءِيلَ الْآتِخِذُوا مِنْ دُونِي وَكِيلًا

3. हे उन की संतति जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। वास्तव में वह अति कृतज्ञ<sup>[2]</sup> भक्त था।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا  
شَكُورًا

4. और हम ने बनी इस्राईल को उन की पुस्तक में सूचित कर दिया था कि तुम इस<sup>[3]</sup> धरती में दो बार उपद्रव

وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي  
الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا

इस आयत में उस सुप्रसिद्ध सत्य की चर्चा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से संबन्धित है। जिसे परिभाषिक रूप से "इस्राअ" कहा जाता है जिस का अर्थ है: रात की यात्रा। इस का सविस्तार विवरण हदीसों में किया गया है।

भाष्यकारों के अनुसार हिज्रत के कुछ पहले अल्लाह ने आप को रात्रि के कुछ भाग में मक्का से मस्जिदे अक्सा तक जो फिलस्तीन में है यात्रा कराई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब मक्का के मिश्रणवादियों ने मुझे झुठलाया, तो मैं हिज्र में (जो काँबा का एक भाग है) खड़ा हो गया। और अल्लाह ने बैतुम मक्दिस को मेरे लिये खोल दिया। और मैं उन्हें उस की निशानियाँ देख कर बताने लगा। (सहीह बुखारी, हदीस: 4710)।

1 जिस पर निर्भर रहा जाये।

2 अतः हे सर्वमानव तुम भी अल्लाह के उपकार के आभारी बनो।

3 अर्थात् बैतुल मक्दिस में।

करोगे, और बड़ा अत्याचार करोगे।

5. तो जब प्रथम उपद्रव का समय आया तो हम ने तुम पर अपने प्रबल योद्धा भक्तों को भेज दिया, जो नगरों में घुस गये, और इस वचन को पूरा होना<sup>[1]</sup> ही था।

6. फिर हम ने उन पर तुम्हें पुनः प्रभुत्व दिया, तथा धनों और पुत्रों द्वारा तुम्हारी सहायता की, और तुम्हारी संख्या बहुत अधिक कर दी।

7. यदि तुम भला करोगे तो अपने लिये, और यदि बुरा करोगे तो अपने लिये। फिर जब दूसरे उपद्रव का समय आया ताकि (शत्रु) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद (अक्सा) में वैसे ही प्रवेश कर जायें जैसे प्रथम बार प्रवेश कर गये, और ताकि जो भी उन के हाथ आये उसे पूर्णतः नाश<sup>[2]</sup> कर दें।

8. संभव है कि तुम्हारा पालनहार तुम पर दया करे। और यदि तुम प्रथम स्थिति पर आ गये, तो हम भी फिर<sup>[3]</sup> आयेंगे, और हम ने नरक को काफ़िरो

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادَنَا أُولَىٰ بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۝

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنُتُمْ لَا تَنْفُسُكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ۝

عَلَىٰ رَبِّكَ أَنْ يَرْحَمَكُم ۚ وَإِنْ عُثِرْتُمْ مَعًا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝

1 इस से अभिप्रेत बाबिल के राजा बुख्तनस्सर का आक्रमण है जो लग भग छः सौ वर्ष पूर्व मसीह हुआ। इस्राईलियों को बंदी बना कर ईराक ले गया और बैतुल मुकद्दस को तहस नहस कर दिया।

2 जब बनी इस्राईल पुनः पापाचारी बन गये, तो रोम के राजा कैसर ने लग भग सन् 70 ई० में बैतुल मक़्दिस पर आक्रमण कर के उन की दुर्गत बना दी। और उन की पुस्तक तौरात का नाश कर दिया और एक बड़ी संख्या को बंदी बना लिया। यह सब उन के कुकर्म के कारण हुआ।

3 अर्थात् संसारिक दण्ड देने के लिये।

के लिये कारावास बना दिया है।

9. वास्तव में यह कुर्आन वह डगर दिखाता है जो सब से सीधी है, और उन ईमान वालों को शुभसूचना देता है जो सदाचार करते हैं, कि उन्हीं के लिये बहुत बड़ा प्रतिफल है।
10. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।
11. और मनुष्य (क्षुब्ध हो कर) अभिशाप करने लगता<sup>[1]</sup> है, जैसे भलाई के लिये प्रार्थना करता है। और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।
12. और हम ने रात्रि तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्रि के प्रतीक को हम ने अंधकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त, ताकि तुम अपने पालनहार के अनुग्रह (जीविका) की खोज करो। और वर्षों तथा हिसाब की गिनती जानो, तथा हम ने प्रत्येक चीज़ का सविस्तार वर्णन कर दिया।
13. और प्रत्येक मनुष्य के कर्म पत्र को हम ने उस के गले का हार बना दिया है। और हम उस के लिये प्रलय के दिन एक कर्मलेख निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा।
14. अपना कर्मलेख पढ़ लो, आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّذِي هُوَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ  
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا  
كَبِيرًا

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ  
عَذَابًا أَلِيمًا

وَيَذُرُّ الْإِنْسَانُ بِالْإِثْمِ كَلَّاهُ بِالْخَيْرِ وَكَانَ  
الْإِنْسَانُ عَجُولًا

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ  
وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّنْ  
رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَاقِدَاتِ الْوَعْدِ وَالْحِسَابُ وَكُلُّ  
شَيْءٍ فَضَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا

وَكُلُّ إِنْسَانٍ لِّزَمْنِهِ لَظِيمٌ فِي عُنُقِهِ وَنُحِيطُ لَهُ  
يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَكُتِبَ إِلَيْهِ مَنشُورًا

إِذَا كُتِبَ عَلَيْكَ إِلْيَمُكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَبِيبًا

1 अर्थात् स्वयं को और अपने घराने को शापने लगता है।



15. जिस ने सीधी राह अपनायी, उस ने अपने ही लिये सीधी राह अपनायी। और जो सीधी राह से विचलित हो गया उस का (दुष्परिणाम) उसी पर है। और कोई दूसरे का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लादेगा।<sup>[1]</sup> और हम यातना देने वाले नहीं हैं जब तक कि कोई रसूल न भेजे।<sup>[2]</sup>

16. और जब हम किसी बस्ती का विनाश करना चाहते हैं तो उस के सम्पन्न लोगों को आदेश देते<sup>[3]</sup> हैं, फिर वह उस में उपद्रव करने लगते<sup>[4]</sup> हैं तो उस पर यातना की बात सिद्ध हो जाती है, और हम उस का पूर्णतः उन्मूलन कर देते हैं।

17. और हम ने बहुत सी जातियों का नूह के पश्चात् विनाश किया है। और आप का पालनहार अपने दासों के पापों से सूचित होने-देखने को बहुत है।

18. जो संसार ही चाहता हो हम उसे यही दे देते हैं, जो हम चाहते हैं, जिस के लिये चाहते हैं। फिर हम उस का परिणाम (परलोक में) नरक बना देते हैं, जिस में वह निन्दित-तिरस्कृत

مِنْ أَهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَلَمَّا  
يَضِلُّ عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ وَمَا كُنَّا  
مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا  
فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ وَكَفَىٰ  
بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ  
نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مِنْ مുമًا مَدْحُورًا

1 आयत का भावार्थ यह है कि जो सदाचार करता है, वह किसी पर उपकार नहीं करता। बल्कि उस का लाभ उसी को मिलना है। और जो दुराचार करता है, उस का दण्ड भी उसी को भोगना है।

2 ताकि वे यह बहाना न कर सकें कि हम ने सीधी राह को जाना ही नहीं था।

3 अर्थात् आज्ञापालन का।

4 अर्थात् हमारी आज्ञा का। आयत का भावार्थ यह है कि समाज के सम्पन्न लोगों का दुष्कर्म, अत्याचार और अवैज्ञा पूरी बस्ती के विनाश का कारण बन जाती है।

हो कर प्रवेश करेगा।

19. तथा जो परलोक चाहता हो और उस के लिये प्रयास करता हो, और वह एकेश्वरवादी हो, तो वही है जिन के प्रयास का आदर सम्मान किया जायेगा।

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝

20. हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किसी से) निषेधित (रोका हुआ) नहीं<sup>[1]</sup> है।

كَلَّا نُمَدِّدُ هُوَآءَهُ وَهُوَ آءٌ مِنْ عَطَاؤِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاؤُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝

21. आप विचार करें कि कैसे हम ने (संसार में) उन में से कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है और निश्चय परलोक के पद और प्रधानता और भी अधिक होगी।

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَلِلْآخِرَةِ الْكِبْرُ دَرَجَاتٌ وَالْأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ۝

22. (हे मानव!) अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, अन्यथा बुरा और असहाय हो कर रह जायेगा।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا الْآخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخَذُومًا ۝

23. और (हे मनुष्य!) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करो, तथा माता - पिता के साथ उपकार करो, यदि तेरे पास दोनों में से एक वृद्धावस्था को पहुँच जाये अथवा दोनों, तो उन्हें उफ़ तक न कहो, और न झिड़को। और उन से सादर बात बोलो।

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا يَآءَهُ وَيَالِ الْيَدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِنَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝

24. और उन के लिये विनम्रता का बाजू दया से झुका<sup>[2]</sup> दो, और प्रार्थना करो:

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ

1 अर्थात् अल्लाह संसार में सभी को जीविका प्रदान करता है।

2 अर्थात् उन के साथ विनम्रता और दया का व्यवहार करो।

اٰرْحَمٰ كَمَا رَبَّنِيْ صَغِيْرًاۙ

हे मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन दोनों ने बाल्यावस्था में मेरा लालन-पालन किया है।

25. तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अन्तरात्माओं (मन) में है। यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के लिये अति क्षमावान् है।

رَبِّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلّٰهِ اَعْيٰنُ غَفُوْرًاۙ

26. और समीपवर्तियों को उन का स्वत्व (हिस्सा) दो, तथा दरिद्र और यात्री को, और अपव्यय<sup>[1]</sup> न करो।

وَ اٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْيَسِيْرَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تَبْذُرُوْا مَّا رَزَقْنٰكُمْۙ

27. वास्तव में अपव्ययी शैतान के भाई है और शैतान अपने पालनहार का अति कृतघ्न है।

اِنَّ الْمُبْدِيْنَ كَالْاٰخِرٰنَ الشَّيْطٰنِ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًاۙ

28. और यदि आप उन से विमुख हों अपने पालनहार की दया की खोज के लिये जिस की आशा रखते हों तो उन से सरल<sup>[2]</sup> बात बोलें।

وَ اِنَّا نَعْرِضُ عَنْهُمْ اٰتِغَاۡ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَعَلْ لَهُمْ قَوْلًا مِّسُوْرًاۙ

29. और अपना हाथ अपनी गरदन से न बाँध<sup>[3]</sup> लो, और न उसे पूरा खोल दो कि निन्दित विवश हो कर रह जाओ।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْضُوْرًاۙ

30. वास्तव में आप का पालनहार ही विस्तृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, तथा संकीर्ण कर देता है। वास्तव में वही अपने दासों

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ لَهٗ كَانَ يَّعْبَادُهٗ خَيْرًاۙ

1 अर्थात् अपरिमित और दुष्कर्म में खर्च न करो।

2 अर्थात् उन्हें सरलता से समझा दें कि अभी कुछ नहीं है। जैसे ही कुछ आया तुम्हें अवश्य दूँगा।

3 हाथ बाँधने और खोलने का अर्थ है, कपण तथा अपव्यय करना। इस में व्यय और दान में संतुलन रखने की शिक्षा दी गयी है।



(बंदों) से अति सूचित<sup>[1]</sup> देखने वाला है<sup>[2]</sup>

31. और अपनी संतान को निर्धन हो जाने के भय से बध न करो, हम उन्हें तथा तुम्हें जीविका प्रदान करेंगे, वास्तव में उन्हें बध करना महा पाप है।

32. और व्यभिचार के समीप भी न जाओ, वास्तव में वह निर्लज्जा तथा बुरी रीति है।

33. और किसी प्राण को जिसे अल्लाह ने हराम (अवैध) किया है, बध न करो, परन्तु धर्म विधान<sup>[3]</sup> के अनुसार। और जो अत्यचार से बध (निहत) किया गया हो हम ने उस के उत्तराधिकारी को अधिकार<sup>[4]</sup> प्रदान किया है। अतः वह बध करने में अतिक्रमण<sup>[5]</sup> न करे, वास्तव में उसे सहायता दी गयी है।

34. और अनाथ के धन के समीप भी न जाओ, परन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये, और वचन पूरा करो, वास्तव में वचन के विषय में प्रश्न किया जायेगा।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِنَّا لَكَارِثُونَ ۝

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطَانًا فَلْيُتَرَفْ فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۝

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝

1 अर्थात् वह सब की दशा और कौन किस के योग्य है देखता और जानता है।

2 हदीस में है कि शिर्क के बाद सब से बड़ा पाप अपनी संतान को खिलाने के भय से मार डालना है। (बुखारी, 4477, मुस्लिम: 86)

3 अर्थात् प्रतिहत्या में अथवा विवाहित होते हुये व्यभिचार के कारण, अथवा इस्लाम से फिर जाने के कारण।

4 अधिकार का अर्थ यह है कि वह इस के आधार पर हत्-दण्ड की मांग कर सकता है, अथवा बध या अर्थ-दण्ड लेने या क्षमा कर देने का अधिकारी है।

5 अर्थात् एक के बदले दो को या दूसरे की हत्या न करे।

35. और पूरा नाप कर दो, जब नापो,  
और सही तराजू से तौलो। यह अधिक  
अच्छा और इस का परिणाम उत्तम है।
36. और ऐसी बात के पीछे न पड़ो, जिस  
का तुम्हें कोई ज्ञान न हो, निश्चय  
कान तथा आँख और दिल इन सब  
के बारे में (प्रलय के दिन) प्रश्न  
किया जायेगा।<sup>[1]</sup>
37. और धरती में अकड़ कर न चलो,  
वास्तव में न तुम धरती को फाड़  
सकोगे, और न लम्बाई में पर्वतों  
तक पहुँच सकोगे।
38. यह सब बातें हैं। इन में बुरी बात  
आप के पालनहार को अप्रिय है।
39. यह तत्वदर्शिता की वह बातें हैं, जिन  
की वही (प्रकाशना) आप की ओर  
आप के पालनहार ने की है, और  
अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न  
बना लेना, अन्यथा नरक में निन्दित  
तिरस्कृत कर के फेंक दिये जाओगे।
40. क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें पुत्र  
प्रदान करने के लिये विशेष कर  
लिया है, और स्वयं ने फरिश्तों को  
पुत्रियाँ बना लिया है? वास्तव में तुम  
बहुत बड़ी बात कह रहे हो।<sup>[2]</sup>

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ  
ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ  
وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ  
وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝

كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝

ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ  
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ  
مَلُومًا مَّدْحُورًا ۝

أَفَأَصْفَكُمْ رَبُّكُمُ بِالْبَنِينَ وَالنَّحْلَاسِ مِنَ الْمَلَائِكَةِ  
إِنَّا نَآئِبُونَ لِقَوْلِ عَظِيمًا ۝

1 अल्लाह, प्रलय के दिन इन को बोलने की शक्ति देगा। और वह उस के विरुद्ध  
साक्ष्य देंगे। (देखिये: सूरह, हा, मीम सज्दा, आयत: 20-21)

2 इस आयत में उन अर्वा का खण्डन किया गया है जो फरिश्तों को अल्लाह की  
पुत्रियाँ कहते थे। जब कि स्वयं पुत्रियों के जन्म से उदास हो जाते थे। और कभी  
ऐसा भी हुआ कि उन्हें जीवित गाड़ दिया जाता था। तो बताओ यह कहाँ का



41. और हम ने विविध प्रकार से इस कुर्आन में (तथ्यों का) वर्णन कर दिया है, ताकि लोग शिक्षा ग्रहण करें। परन्तु उस ने उन की घृणा को और अधिक कर दिया।
42. आप कह दें कि यदि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य होते, जैसा कि वह (मिश्रणवादी) कहते हैं, तो वह अर्श (सिंहासन) के स्वामी (अल्लाह) की ओर अवश्य कोई राह<sup>[1]</sup> खोजते।
43. वह पवित्र और बहुत उच्च है, उन बातों से जिन को वे बनाते हैं।
44. उस की पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है। और नहीं है कोई चीज़ परन्तु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उन के पवित्रता गान को समझते नहीं हो। वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है।
45. और जब आप कुर्आन पढ़ते हैं, तो हम आप के बीच और उन के बीच जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, एक छुपा हुआ आवरण (पर्दा) बना<sup>[2]</sup> देते हैं।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝

ثُلُوكًا مَعَ إِلَهِهِمْ كَمَا يَقُولُونَ إِذْ أَتَوْا آلَ ذِي الْعَرْشِ مَبْيِلًا ۝

سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَلَنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا أَيْتُهُ بِحُجْدٍ ۚ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ جَلِيمًا غَفُورًا ۝

وَإِذْ أَقْرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُرْآنًا مَّسْتُورًا ۝

न्याय है कि अपने लिये पुत्रियों को अप्रिय समझते हो और अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बना रखी हो?

1 ताकि उस से संघर्ष कर के अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें।

2 अर्थात् परलोक पर ईमान न लाने का यही स्वभाविक परिणाम है कि कुर्आन को समझने की योग्यता खो जाती है।

46. तथा उन के दिलों पर ऐसे खोल चढ़ा देते हैं कि उस (कुर्आन) को न समझें, और उन के कानों में बोझ। और जब आप अपने अकेले पालनहार की चर्चा कुर्आन में करते हैं तो वह घृणा से मुँह फेर लेते हैं।

47. और हम उन के विचारों से भली भाँति अवगत हैं, जब वे कान लगा कर आप की बात सुनते हैं, और जब वे आपस में कानाफूसी करते हैं। जब वे अत्याचारी करते हैं कि तुम लोग तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण<sup>[1]</sup> करते हो।

48. सोचिये कि वह आप के लिये कैसे उदाहरण दे रहे हैं? अतः वे कुपथ हो गये, वह सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

49. और उन्होंने ने कहा: क्या हम जब अस्थियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो जायेंगे तो क्या हम वास्तव में नई उत्पत्ति में पुनः जीवित कर दिये<sup>[2]</sup> जायेंगे?

50. आप कह दें कि पत्थर बन जाओ, या लोहा।

51. अथवा कोई उत्पत्ति जो तुम्हारे मन में इस से बड़ी हो। फिर वे पूछते हैं कि कौन हमें पुनः जीवित करेगा? आप कह दें: वही जिस ने प्रथम चरण

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ كِتَابًا أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا ذُكِرْتُ رَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَعْلَىٰ  
أَذْبَارِهِمْ تُفَوَّرًا ۝

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ  
سَبِيلًا ۝

وَقَالُوا لَإِذَا الْكُنُوزُ أَرْقَأْنَا وَإِنَّا الْمَبْعُوثُونَ خَلْقًا  
جَدِيدًا ۝

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ  
يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ  
فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ

1 मक्का के काफ़िर छुप-छुप कर कुर्आन सुनते। फिर आपस में परामर्श करते कि इस का तोड़ क्या हो? और जब किसी पर संदेह हो जाता कि वह कुर्आन से प्रभावित हो गया है। तो उसे समझाते कि इस के चक्कर में क्या पड़े हो, इस पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिये बहकी-बहकी बातें कर रहा है।

2 ऐसी बात वह परिहास अथवा इन्कार के कारण कहते थे।



में तुम्हारी उत्पत्ति की है। फिर वह आप के आगे सिर हिलायेंगे<sup>[1]</sup>, और कहेंगे: ऐसा कब होगा? आप कह दें कि संभवतः वह समीप ही है।

52. जिस दिन वे तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की प्रशंसा करते हुये स्वीकार कर लोगे<sup>[2]</sup> और यह सोचोगे कि तुम (संसार में) थोड़े ही समय रहे हो।

53. और आप मेरे भक्तों से कह दें कि वह बात बोलें जो उत्तम हो, वास्तव में शैतान उन के बीच बिगाड़ उत्पन्न करना चाहता<sup>[3]</sup> है। निश्चय शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

54. तुम्हारा पालनहार तुम से भली भाँति अवगत है, यदि चाहे तो तुम पर दया करे, अथवा यदि चाहे तो तुम्हें यातना दे, और हम ने आप को उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा<sup>[4]</sup> है।

55. (हे नबी!) आप का पालनहार भली भाँति अवगत है उस से जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने प्रधानता दी है कुछ नबियों को कुछ पर, और हम ने दावूद को ज़बूर (पुस्तक) प्रदान की।

هُوَ قَوْلُ عَنَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِئْسُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝

وَقُلْ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمُ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝

وَكَلَّمَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِن يَشَاءُ رَحْمَةً أُولَئِكَ يَشَاءُ عَذَابُكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝

1 अर्थात् परिहास करते हुये आश्चर्य से सिर हिलायेंगे।

2 अर्थात् अपनी कब्रों से प्रलय के दिन जीवित हो कर उपस्थित हो जाओगे।

3 अर्थात् कटु शब्दों द्वारा।

4 अर्थात् आप का दायित्व केवल उपदेश पहुँचा देना है, वह तो स्वयं अल्लाह के समीप होने की आशा लगाये हुये हैं, कि कैसे उस तक पहुँचा जाये तो भला वे पूज्य कैसे हो सकते हैं।

56. आप कह दें कि उन को पुकारो, जिन को उस (अल्लाह) के सिवा (पूज्य) समझते हो। न वे तुम से दुःख दूर कर सकते, और न (तुम्हारी दशा) बदल सकते हैं।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ  
كُشْفَ الضَّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۝

57. वास्तव में जिन को यह लोग<sup>[1]</sup> पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामिप्य प्राप्त करने का साधन<sup>[2]</sup> खोजते हैं, कि कौन अधिक समीप है? और उस की दया की आशा रखते हैं। और उस की यातना से डरते हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ  
إِنَّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ  
إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝

58. और कोई (अत्याचारी) बस्ती नहीं है, परन्तु हम उसे प्रलय के दिन से पहले ध्वस्त करने वाले या कड़ी यातना देने वाले हैं। यह (अल्लाह के) लेख में अंकित है।

وَلَنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ  
أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ  
مَسْطُورًا ۝

59. और हमें नहीं रोका इस से कि हम निशानियाँ भेजें किन्तु इस बात ने कि विगत लोगों ने उन्हें झुठला<sup>[3]</sup> दिया। और हम ने समुद्र को ऊँटनी का खुला चमत्कार दिया, तो उन्होंने ने उस पर अत्याचार किया। और हम चमत्कार डराने के लिये ही भेजते हैं।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا  
الْأَوَّلُونَ وَآتَيْنَا مُوْسَىٰ النَّاقَةَ مَبْصُورَةً فَنَظَرُوا فِيهَا  
وَمَا تُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۝

60. और (हे नबी!) याद करो जब हम

وَاذْكُرْنَا لَإِنَّ رَبَّكَ أَحْلَطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا

1 अर्थात् मुशरिक जिन नबियों, महापुरुषों और फरिश्तों को पुकारते हैं।

2 साधन से अभिप्रेत सत्कर्म और सदाचार है।

3 अर्थात् चमत्कार की माँग करने पर चमत्कार इस लिये नहीं भेजा जाता कि उस के पश्चात् न मानने पर यातना का आना अनिवार्य हो जाता है, जैसा कि भाष्यकारों ने लिखा है।



ने आप से कह दिया था कि आप के पालनहार ने लोगों को अपने नियंत्रण में ले रखा है, और यह जो कुछ हम ने आप को दिखाया<sup>[1]</sup> उस को और उस वृक्ष को जिस पर कुर्आन में धिक्कार की गयी है, हम ने लोगों के लिये एक परीक्षा बना दिया<sup>[2]</sup> है, और हम उन्हें चेतावनी पर चेतावनी दे रहे हैं, फिर भी वह उन की अवैज्ञा को ही अधिक करती जा रही है।

الَّتِي آتَيْنَاكَ الْآفْتِنَةَ لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُحَوِّطُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝

61. और (याद करो), जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया। उस ने कहा: क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तू ने गारे से उत्पन्न किया है?

وَاذْكُرْنَا لِلْمَلَكَةِ اسْجُدْ وَالْإِدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ مَا أَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ۝

62. (तथा) उस ने कहा: तू बता, क्या यही है जिसे तूने मुझ पर प्रधानता दी है? यदि तू ने मुझे प्रलय के दिन तक अवसर दिया तो मैं उस की संतति को अपने नियंत्रण में कर लूँगा<sup>[3]</sup> कुछ के सिवा।

قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَنْ أُوْحِرْنَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لِأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۝

63. अल्लाह ने कहा: "चले जाओ", जो उन में से तेरा अनुसरण करेगा तो

قَالَ أَذْهَبُ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ

1 इस से संकेत "मेअराज" की ओर है। और यहाँ "रु, या" शब्द का अर्थ स्वप्न नहीं बल्कि आँखों से देखना है। और धिक्कारे हुये वृक्ष से अभिप्राय ज़कूम (थोहड़) का वृक्ष है। (सहीह बुखारी, हदीस, 4716)

2 अर्थात् काफ़िरों के लिये जिन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ही रात में बैतुल मुकद्दस पहुँच जायें फिर वहाँ से आकाश की सैर कर के वापिस मक्का भी आ जायें।

3 अर्थात् कुपथ कर दूंगा।

निश्चय नरक तुम सब का प्रतिकार  
(बदला) है, भरपूर बदला।

جَزَاءُكُمْ جَزَاءُ مُؤَفَّرًا ۝

64. तू उन में से जिस को हो सके अपनी ध्वनि<sup>[1]</sup> से बहका ले। और उन पर अपनी सवार और पैदल (सेना) चढ़ा<sup>[2]</sup> ले। और उन का (उन के) धनों और संतान में साझी बन<sup>[3]</sup> जा। तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे। और शैतान उन्हें धोखे के सिवा (कोई) वचन नहीं देता।

وَأَسْتَفْزِرُ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ  
وَأَجْلِبُ عَلَيْهِمْ بِخَبِيرِكَ وَرَجْلِكَ وَشَارِكُهُمْ فِي  
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدُهُمْ وَمَا يَعِدُ هُمُ الشَّيْطَانُ  
الْأَفْوَورًا ۝

65. वास्तव में जो मेरे भक्त हैं उन पर तेरा कोई बश नहीं चल सकता। और आप के पालनहार का सहायक होना यह बहुत है।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَى بِرَبِّكَ  
وَكِيلًا ۝

66. तुम्हारा पालनहार तो वह है जो तुम्हारे लिये सागर में नौका चलाता है, ताकि तुम उस की जीविका की खोज करो, वास्तव में वह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُرْجِي لَكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا  
مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝

67. और जब सागर में तुम पर कोई आपदा आ पड़ती है, तो अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो खो जाते (भूल जाते) हो।<sup>[4]</sup> और जब तुम्हें बचा कर थल तक पहुँचा देता है तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य है हि अति कृतघ्न।

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ  
إِلَّا آيَاتُهُ فَلَمَّا بَلَغْتُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ  
الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝

1 अर्थात् गाने और बाजे द्वारा।

2 अर्थात् अपने जिन्न और मनुष्य सहायकों द्वारा उन्हें बहकाने का उपाय कर ले।

3 अर्थात् अवैध धन अर्जित करने और व्यभिचार की प्रेरणा दे।

4 अर्थात् ऐसी दशा में केवल अल्लाह याद आता है और उसी से सहायता माँगते हो किन्तु जब सागर से निकल जाते हो तो फिर उन्हीं देवी देवताओं की वंदना करने लगते हो।



68. क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल (धरती) ही में धंसा दे? अथवा तुम पर पथरीली आँधी भेज दे? फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ।

69. या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस (सागर) में तुम को दूसरी बार ले जाये, फिर तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दे, फिर तुम को डूबो दे, उस कुफ़्र के बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिये उसे नहीं पाओगे जो हम पर इस का दोष<sup>[1]</sup> धरे।

70. और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी, और उन्हें थल और जल में सवार<sup>[2]</sup> किया, और उन्हें स्वच्छ चीजों से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीजों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है।

71. जिस दिन हम सब लोगों को उन के अग्रणी के साथ बुलायेंगे तो जिन का कर्मलेख उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा तो वही अपना कर्मलेख पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी अत्याचार नहीं किया जयेगा।

72. और जो इस (संसार) में अन्धा<sup>[3]</sup> रह गया तो वह आखिरत (परलोक) में भी अन्धा और अधिक कुपथ होगा।

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُ الْكَافِرِينَ كَيْدًا

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُفْرُكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيَغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُ الْكَافِرِينَ عَلَيْهِمْ نَبِيْعًا ۝

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ فَمَنْ أَؤْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يَطْلُمُونَ فَتِيلًا ۝

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَى فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَى وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

1 और हम से बदले की माँग कर सके।

2 अर्थात् सवारी के साधन दिये।

3 अर्थात् सत्य से अन्धा।

73. और (हे नबी!) वह (काफिर) समीप था कि आप को उस वही से फेर दें, जो हम ने आप की ओर भेजी है, ताकि आप हमारे ऊपर अपनी ओर से कोई दूसरी बात घड़ लें, और उस समय वह आप को अवश्य अपना मित्र बना लेते।

74. और यदि हम आप को सुदृढ़ न रखते, तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते।

75. तब हम आप को जीवन की दुगुनी तथा मरण की दोहरी यातना चखाते। फिर आप अपने लिये हमारे ऊपर कोई सहायक न पाते।

76. और समीप है कि वह आप को इस धरती (मक्का) से बिचला दें, ताकि आप को उस से निकाल दें, तब वह आप के पश्चात् कुछ ही दिन रह सकेंगे।

77. यह<sup>[1]</sup> उस के लिये नियम रहा है जिसे हम ने आप से पहले अपने रसूलों में से भेजा है। और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पायेंगे।

78. आप नमाज़ की स्थापना करें सूर्यास्त से रात के अन्धेरे<sup>[2]</sup> तक, तथा प्रातः (फ़ज्र के समय) कुर्आन पढ़िये। वास्तव में प्रातः कुर्आन पढ़ना उपस्थिति का समय<sup>[3]</sup> है।

فَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أُوحِیْنَآ إِلَیْكَ لَتَغْتَرِبَ عَلَیْنَا غَیْرَهُ وَإِذْ الْأَعْدَآءُ لَوَ خَلِیْلٌۭ

وَلَوْلَا أَن تَبْتَئِنَّاكَ لَفَكَدْتُمْ تَرْكُنَ إِلَیْهِمْ سِیِّئًا قَلِیْلٌۭ

إِذَا الْأَذْفَقُ فَك ضَعْفَ الْحَبِیْوةِ وَضَعْفَ الْمَمَآتِ ثُمَّ لَاَیْحَدُ لَكَ عَلَیْنَا نَصِیْرٌۭ

وَإِنْ كَادُوا لَیَسْتَفْزِفُونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لَیُخْرِجُوا مِنْهَا وَإِذْ الْأَیْمَنُونَ خَلْفَكَ إِلَّا قَلِیْلٌۭ

سُنَّةٍ مِّن قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَحِدُ لِسُنَّتِنَا أَنْ یَحْدِلُوا

أَقِمِ الصَّلَوةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّیْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا

1 अर्थात् रसूल को निकालने पर यातना देने का हमारा नियम रहा है।

2 अर्थात् जुहर, अस्त्र और मग़रिब तथा इशा की नमाज़।

3 अर्थात् फ़ज्र की नमाज़ के समय रात और दिन के फरिश्ते एकत्र तथा उपस्थित



79. तथा आप रात के कुछ समय जागिये फिर "तहज्जुद"<sup>[1]</sup> पढ़िये। यह आप के लिये अधिक (नफ़ल) है। संभव है आप का पालनहार आप को (मकामे महमूद)<sup>[2]</sup> प्रदान कर दे।

80. और प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! मुझे प्रवेश<sup>[3]</sup> दे सत्य के साथ, और निकाल सत्य के साथ। तथा मेरे लिये अपनी ओर से सहायक प्रभुत्व बना दे।

81. तथा कहिये कि सत्य आ गया, और असत्य ध्वस्त-निरस्त हो गया, वास्तव में असत्य को ध्वस्त-निरस्त होना ही है।<sup>[4]</sup>

82. और हम कुर्आन में वह चीज़ उतार रहे हैं, जो आरोग्य तथा दया है ईमान वालों के लिये। और वह अत्याचारियों की क्षति को ही अधिक करता है।

83. और जब हम मानव पर उपकार करते हैं, तो मुख फेर लेता है और

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدْ لَهُ وَأَقْلَمُ لَكَ نَعْمَىٰ أَنْ يَغْفِرَ لَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ أَمْرِكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا ۝

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأْمِنُ بِهِ ۝

रहते हैं। (सहीह बुखारी-359, सहीह मुस्लिम-632)

1 तहज्जुद का अर्थ है: रात के अन्तिम भाग में नमाज़ पढ़ना।

2 (मकामे महमूद) का अर्थ है प्रशंसा योग्य स्थान। और इस से अभिप्राय वह स्थान है जहाँ से आप प्रलय के दिन शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेंगे।

3 अर्थात् मदीना में, मक्का से निकाल कर।

4 अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का (की विजय के दिन) उस में प्रवेश किया तो कौबा के आस पास तीन सौ साठ मुर्तियाँ थीं। और आप के हाथ में एक छड़ी थी, जिस से उन को मार रहे थे। और आप यही आयत पढ़ते जा रहे थे। (सहीह बुखारी, 4720, मुस्लिम, 1781)

दूर हो जाता<sup>[1]</sup> है। तथा जब उसे दुःख पहुँचता है, तो निराश हो जाता है।

84. आप कह दें कि प्रत्येक अपनी आस्था के अनुसार कर्म कर रहा है, तो आप का पालनहार ही भली भाँति जान रहा है कि कौन अधिक सीधी डगर पर है।

85. (हे नबी!) लोग आप से रूह<sup>[2]</sup> के विषय में पूछते हैं, आप कह दें रूह मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया वह बहुत थोड़ा है।

86. और यदि हम चाहें तो वह सब कुछ ले जायें जो आप की ओर हम ने वही किया है, फिर आप हम पर अपना कोई सहायक नहीं पायेंगे।

87. किन्तु आप के पालनहार की दया के कारण (यह आप को प्राप्त है)। वास्तव में उस का प्रदान आप पर बहुत बड़ा है।

88. आप कह दें: यदि सब मनुष्य तथा जिन्ह इस पर एकत्र हो जायें कि इस कुर्आन के समान ला देंगे, तो इस के समान नहीं ला सकेंगे, चाहे वह एक दूसरे के समर्थक ही क्यों न हो जायें।

89. और हम ने लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण विविध शैली में वर्णित किया है, फिर भी

وَإِذَا مَسَّهُ الشُّرُكَانَ يُوَسْوِسُ

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ هَٰذَا سَيِّئًا

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا

وَلَكِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا

إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا

قُلْ لَئِنْ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَلَّى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا

1 अर्थात् अल्लाह की आज्ञा का पालन करने से।

2 «रूह» का अर्थ: आत्मा है जो हर प्राणी के जीवन का मूल है। किन्तु उस की वास्तविकता क्या है? यह कोई नहीं जानता। क्योंकि मनुष्य के पास जो ज्ञान है वह बहुत कम है।



अधिकतर लोगों ने कुफ़्र के सिवा  
अस्वीकार ही किया है।

90. और उन्होंने ने कहा: हम आप पर  
कदापि ईमान नहीं लायेंगे, यहाँ तक  
कि आप हमारे लिये धरती से एक  
चश्मा प्रवाहित कर दें।

91. अथवा आप के लिये खजूर अथवा  
अँगूर का कोई बाग़ हो, फिर उस के  
बीच आप नहरें प्रवाहित कर दें।

92. अथवा हम पर आकाश को जैसा  
आप का विचार है, खण्ड-खण्ड कर  
के गिरा दें, या अल्लाह और फ़रिश्तों  
को साक्षात् हमारे सामने ला दें।

93. अथवा आप के लिये सोने का एक  
घर हो जाये, अथवा आकाश में चढ़  
जायें, और हम आप के चढ़ने का  
भी कदापि विश्वास नहीं करेंगे, यहाँ  
तक की हम पर एक पुस्तक उतार  
लायें जिसे हम पढ़ें। आप कह दें कि  
मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो बस  
एक रसूल (संदेशवाहक) मनुष्य<sup>[1]</sup> हूँ।

94. और नहीं रोका लोगों को कि वह  
ईमान लायें, जब उन के पास

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ  
يَنْبُوعًا ۝

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَبَّةٌ مِّنْ نَّحِيلٍ وَعَنْبٍ فَتُفَجِّرَ  
الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ۝

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ  
وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ۝

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ ذُرِّهِ فِي السَّمَاءِ  
وَلَنْ نُؤْمِنَ بِرُفْقِكَ حَتَّى تُنْزِلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرؤه  
قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ۝

وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى

1 अर्थात् मैं अपने पालनहार की वही का अनुसरण करता हूँ और यह सब चीजें  
अल्लाह के बस में हैं। यदि वह चाहे तो एक क्षण में सब कुछ कर सकता है  
किन्तु मैं तो तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ मुझे केवल रसूल बना कर भेजा गया है  
ताकि तुम्हें अल्लाह का संदेश सुनाऊँ। रहा चमत्कार तो वह अल्लाह के हाथ में  
है। जिसे चाहे दिखा सकता है। फिर क्या तुम चमत्कार देख कर ईमान लाओगे?  
यदि ऐसा होता तो तुम कभी के ईमान ला चुके होते क्योंकि कुर्आन से बड़ा  
क्या चमत्कार हो सकता है।

मार्गदर्शन<sup>[1]</sup> आ गया, परन्तु इस ने कि उन्होंने ने कहा: क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है?

الْآن قَالَ الْوَالِدُ الَّذِي بَشَّرَ رَسُولًا

95. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फरिश्ते निश्चिन्त हो कर चलते-फिरते होते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फरिश्ता रसूल बना कर उतारते।

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يُنْشَوْنَ مُطْمَئِنِّينَ  
لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا

96. आप कह दें कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य<sup>[2]</sup> बहुत है। वास्तव में वह अपने दासों (बंदों) से सूचित, सब को देखने वाला है।

قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ  
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

97. जिसे अल्लाह सुपथ दिखा दे, वही सुपथगामी है। और जिसे कुपथ कर दे तो आप कदापि नहीं पायेंगे उन के लिये उस के सिवा कोई सहायक। और हम उन्हें एकत्र करेंगे प्रलय के दिन उन के मुखों के बल अंधे तथा गूँगे और बहरे बना कर। और उन का स्थान नरक है, जब भी वह बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ  
تَجِدَ لَهُم أَوْلِيَاءَ مِن دُونِهِ وَيَحْشُرُهُم يَوْمَ الْقِيَمَةِ  
عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمًٌّا وَبُكْمًا وَصُمًّا مَّا وَلَهُمْ جَهَنَّمُ  
كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا

98. यही उन का प्रतिकार (बदला) है, इस लिये कि उन्होंने ने हमारी आयतों के साथ कुफ़ किया, और कहा: क्या जब हम अस्थियाँ और चूर-चूर हो जायेंगे तो नई उत्पत्ति में पुनः जीवित किये जायेंगे?<sup>[3]</sup>

ذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن كَفَرَ وَأَيَّاكُمَا قَالَ وَإِذَا  
كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاقًا إِنَّا لَمُبْعُوثُونَ خَلْقًا  
جَدِيدًا

1 अर्थात् रसूल तथा पुस्तकें संमार्ग दर्शाने के लिये।

2 अर्थात् मेरे रसूल होने का साक्षी अल्लाह है।

3 अर्थात् ऐसा होना संभव नहीं है कि जब हमारी हड्डियाँ सड़ गल जायें तो हम



99. क्या वह विचार नहीं करते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की है, वह समर्थ है इस बात पर कि उन के जैसी उत्पत्ति कर दे<sup>[1]</sup> तथा उस ने उन के लिये एक निर्धारित अवधि बनायी है, जिस में कोई संदेह नहीं है। फिर भी अत्याचारियों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया।
100. आप कह दें कि यदि तुम ही स्वामी होते अपने पालनहार की दया के कोषों के, तब तो तुम खर्च हो जाने के भय से (अपने ही पास) रोक रखते, और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है।
101. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी<sup>[2]</sup>, अतः बनी इस्राईल से आप पूछ लें, जब वह (मूसा) उन के पास आया, तो फिरऔन ने उस से कहा: हे मूसा! मैं समझता हूँ कि तुझ पर जादू कर दिया गया है।
102. उस (मूसा) ने उत्तर दिया: तूझे विश्वास है कि इन को आकाशों तथा धरती के पालनहार ही ने सोच-विचार करने के लिये उतारा है, और हे फिरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ  
قَادِرٌ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا  
لَّا رَيْبَ فِيهِ فَإِنِّي الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ۝

قُلْ لَّوْ أَن تُمَوَّلَكُم مَّا تُبْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا  
لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ  
مُتَوَرِّدًا ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَعَلُ بَنِي  
إِسْرَءِيلَ إِفْجَاءً ثُمَّ قَالُوا لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ  
يَمُوسَى مُنْجُورًا ۝

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُ مَا أُنْزِلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رُبُّ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضِ بِصَلَاتِكُمْ إِنِّي لَأَظُنُّكُمْ يُفْرِعُونَ مَثْبُورًا ۝

फिर उठाये जायें।

- 1 अर्थात् जिस ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति की उस के लिये मनुष्य को दोबारा उठाना अधिक सरल है, किन्तु वह समझते नहीं हैं।
- 2 वह नौ निशानियाँ निम्नलिखित थीं: हाथ की चमक, लाठी, आकाल, तूफान, टिंडी, जूयें, मेंढक, खून, और सागर का दो भाग हो जाना।

103. अन्ततः उस ने निश्चय किया कि उन<sup>[1]</sup> को धरती से<sup>[2]</sup> उखाड़ फेंके, तो हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया।

104. और हम ने उस के पश्चात् बनी इस्राईल से कहा: तुम इस धरती में बस जाओ। और जब आखिरत के वचन का समय आयेगा, तो हम तुम्हें एकत्र कर लायेंगे।

105. और हम ने सत्य के साथ ही इस (कुर्आन) को उतारा है, तथा वह सत्य के साथ ही उतरा है। और हम ने आप को बस शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बना कर भेजा है।

106. और इस कुर्आन को हम ने थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है, ताकि आप लोगों को इसे रुक रुक कर सुनायें, और हम ने इसे क्रमशः<sup>[3]</sup> उतारा है।

107. आप कह दें कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा ईमान न लाओ, वास्तव में जिन को इस से पहले ज्ञान दिया<sup>[4]</sup> गया है, जब उन्हें यह सुनाया जाता है, तो वह मुँह के बल सज्दे में गिर जाते हैं।

108. और कहते हैं: पवित्र है हमारा

فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَفِرَ مِنْهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝

وَقُلْنَا مَنْ بَعْدَ الْبَنِيِّ إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝

وَالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

وَقَرَأْنَا لَهُمْ آيَاتِهِ لِيَتَذَكَّرَ عَلَى النَّاسِ عَلَى نَكُتٍ وَأَنْزَلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَمْرٌ أَوْ لَا تَوُفُّوهُ إِنَّا الَّذِينَ أَوْفُوا الْعَهْدَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُعْتَلَى عَلَيْهِمْ يَخْرُجُونَ لِلْآذِقَانِ سُجَّدًا ۝

وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝

1 अर्थात् बनी इस्राईल को।

2 अर्थात् मिस्र से।

3 अर्थात् तेईस वर्ष की अवधि में।

4 अर्थात् वह विद्वान जिन को कुर्आन से पहले की पुस्तकों का ज्ञान है।



पालनहार! निश्चय हमारे पालनहार  
का वचन पूरा हो के रहा।

109. और वह मुँह के बल रोते हुये गिर  
जाते हैं। और वह उन की विनय को  
अधिक कर देता है।

110. हे नबी! आप कह दें कि (अल्लाह)  
कह कर पुकारो, अथवा (रहमान)  
कह कर पुकारो, जिस नाम से भी  
पुकारो, उस के सभी नाम शुभ<sup>[1]</sup>  
हैं। और (हे नबी!) नमाज़ में स्वर  
न तो ऊँचा करो, और न उसे  
नीचा करो, और इन दोनों के बीच  
की राह<sup>[2]</sup> अपनाओ।

111. तथा कहो कि सब प्रशंसा उस  
अल्लाह के लिये है जिस के कोई  
संतान नहीं, और न राज्य में उस  
का कोई साझी है। और न अपमान  
से बचाने के लिये उस का कोई  
समर्थक है। और आप उस की  
महिमा का वर्णन करें।

وَيَجْرُونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۝

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيُّمَا تَدْعُوا فَلَهُ الْكُتُبُ  
الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرُوا بِصَلَاتِكُمْ وَلَا تَخَافُتْ بِهَا وَابْتَغِ  
بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ  
شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلِيلِ  
وَكَثْرَةُ نِكَايَرًا ۝

1 अरब में "अल्लाह" शब्द प्रचलित था, मगर "रहमान" प्रचलित न था। इस लिये, वह इस नाम पर आपत्ति करते थे। यह आयत इसी का उत्तर है।

2 हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (आरंभिक युग में) मक्का में छुप कर रहते थे। और जब अपने साथियों को ऊँचे स्वर में नमाज़ पढ़ाते थे तो मुशरिक उसे सुन कर कुर्आन को तथा जिस ने कुर्आन उतारा है, और जो उसे लाया है, सब को गालियाँ देते थे। अतः अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया। (सहीह बुखारी, हदीस नं॰: 4722)